संपादक का नोट

भजन संहिता 122:1 ''जब लोगों ने मुझ से कहा, "आओ, हम यहोवा के भवन को चलें," तब मैं आनन्दित हुआ।'' दाऊद ने कभी भी प्रभु के पवित्र मंदिर में जाने का अवसर नहीं गंवाया क्योंकि वह हमेशा सर्वशक्तिमान प्रभु की उपस्थिति में रहने के लिए प्यासा था। दाऊद जानता था कि मंदिर ही वह स्थान है जहाँ वह अपना बोझ उतार सकता है, अपने सभी पापों से छुटकारा पा सकता है, और सभी आशीषों को प्राप्त कर सकता है। इसी तरह, हमें भी प्रभु के पवित्र मंदिर में आने की प्यास होनी चाहिए, क्योंकि यह पवित्र और चुना हुआ स्थान है जहाँ हम अपने सभी प्रार्थनाओं का उत्तर प्राप्त करेंगे। जब सुलैमान ने मन्दिर बनाया, तब उस ने इस पवित्र मन्दिर में यहोवा के लिए बलिदान किए; और यहोवा ने उस से कहा, जैसा की दिया गया है वचन 2 इतिहास 7:15 ''अब से जो प्रार्थना इस स्थान में की जाएगी, उस पर मेरी आँखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे।'' प्रभु हर जगह हैं और हम पवित्र आत्मा के मंदिर हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन फिर भी एक चुना हुआ स्थान है जहां प्रभु परम पावन, शक्ति और महिमा में रहते हैं; जो हमारे सभी आशीषों का केंद्र है। यह हम पर निर्भर है कि हम विश्वास करें कि हमारा परमेश्वर यहोवा हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे। परमेश्वर की आंखें देखेगी, और पवित्र मंदिर में की जाने वाली प्रत्येक प्रार्थना के लिए उनके कान खुले रहेंगे, जैसा कि बाइबिल में कई बार दर्ज किया गया है!

भजन संहिता 91:14 ''उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊँगा, मैं उसको ऊँचे स्थान पर रखूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।'' आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यीशु ने प्रगट किया की जो लोग उनसे प्रेम नहीं करते है, वे उनके वचन का पालन भी नहीं करते हैं। साथ ही, यदि आपके हृदय में परमेश्वर का सच्चा प्रेम नहीं है, चाहे कितना भी वचन का प्रचार किया जाए, यह आपके हृदय को कभी नहीं छूएगा। यूहन्ना 14:24 ''जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा।'' यीशु ने कहा कि जिस वचन का उन्होंने प्रचार किया वह उनका नहीं था, बल्कि ऊपर से उनके पिता का था, जिसने उन्हें भेजा था। इसलिए यीशु और बाइबिल में वचन स्पष्ट रूप से कहते हैं कि जो लोग यीशु से प्रेम नहीं करते हैं वे विश्वास नहीं करेंगे और उनके सच्चे वचन को स्वीकार नहीं करेंगे। जब हम उनके वचन पर विश्वास करते हैं, तो हम निश्चित रूप से अपने जीवन में परमेश्वर के पराक्रमी कार्यों को देखेंगे। हमारा परमेश्वर पक्षपात करनेवाला परमेश्वर नहीं है, वह बदलते नहीं है; बल्कि हमें बदलना चाहिए और अपने दुष्ट जीवन से दूर हो जाना चाहिए।

इसलिए प्यारे भाइयों और बहनों, जब भी आप प्रभु के कलीसिया में जाते हैं, अर्थात, पवित्र मन्दिर में यह स्मरण रखना कि आप अपने उद्धारकर्ता यहोवा से भेंट करने जा रहें है; सारी पवित्रता, स्तुति, आनन्द, सच्चाई, और अपने मन में पूरी श्रद्धा के साथ उनके सामने जाना; क्योंकि केवल तब ही उन प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जाएगा, जो आप प्रभु से करते है।

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

परमेश्वर के पहरेदार बने।

यहेजकेल 33:7 ''इसलिये, हे मनुष्य के सन्तान, मैं ने तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहरा दिया है; तू मेरे मुँह से वचन सुन सुनकर उन्हें मेरी ओर से चिता दे।'' एक पहरेदार का काम परमेश्वर और मनुष्य के बीच खड़ा होना है। एक तरफ एक पहरेदार को ध्यान से सुनने की जरूरत है कि परमेश्वर क्या कहता है और दूसरी ओर उसे अपने लोगों को परमेश्वर की चेतावनी देने की जरूरत है। शास्त्र में, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने नबी एलिय्याह को इस्राएलियों के लिए एक पहरेदार के रूप में नियुक्त किया था। इस्राएली मूर्तियों की आराधना करने में लगे हुए थे और यहोवा के विरुद्ध गए। इस प्रकार नबी एलिय्याह एक पहरेदार के रूप में प्रभु और इस्राएलियों के बीच खड़े थे और उन्होंने उन्हें प्रभु की चेतावनी दी, ताकि वे मूर्ति पूजा से दूर हो जाएं। इस्राएलियों ने परमेश्वर के प्रेम और भय को त्याग दिया और मूर्तिपूजक के रूप में इस संसार के मार्गों में बह गए। एक पहरेदार के रूप में एलिय्याह ने क्या किया? उसने यहोवा से प्रार्थना की और स्वर्ग से आग बुलाई। जब उसके बलिदान को भस्म करने के लिए स्वर्ग से आग उतरी, तो इस्राएलियों ने एक बार फिर परमेश्वर का भय माना। अंत में, बाल के नबियों को सताया गया। इस प्रकार, एक अच्छे पहरेदार का काम इस प्रकार अपने लोगों को परमेश्वर की चेतावनी देना है। एक पहरेदार भी कई बार थक जाता है और वह कमजोर और निर्बल हुआ हो ऐसा महसूस भी कर सकता है। उसी तरह, एलिय्याह भी इस्राएलियों के हठीले और आज्ञा न मानने के कारण उनका पहरेदार बनकर थक गया था। इस प्रकार, उसने स्वर्ग से आग को बुलाया और एक बार फिर उन्हें परमेश्वर का पराक्रमी कार्य दिखाया। जब बाल के सभी भविष्यद्वक्ता मारे गए और इस्राएलियों ने विजय प्राप्त की, तो यह समाचार रानी ईज़ेबेल तक पहुँच गया। फिर उसने अपने सन्देशवाहको के माध्यम से नबी एलिय्याह को एक संदेश दिया, कि वह इस्राएलियों पर लगभग दस गुना अधिक दंड लाएगी।

स्मरण रहे कि पहरेदार को भी दुःख, पीड़ा और थकान का अनुभव होता है। लेकिन, उनका दिलासा देने वाला कौन है? परमेश्वर उनका दिलासा देने वाला है। परमेश्वर ने अपने दूत को एलिय्याह को मन्ना खिलाने के लिए भेजा, उसके बाद एलिय्याह को और चालीस दिन और रातों के लिए प्रभु परमेश्वर के लिए दौड़ने के लिए दृढ़ किया गया। जो यहोवा के सच्चे पहरेदार हैं, वे भी थक जाते हैं, परन्तु परमेश्वर उन्हें दृढ़ करते है। 1 राजा 18:35–40 'और जल वेदी के चारों ओर बह गया, और गड़हे को भी उसने जल से भर दिया। फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जाकर कहने लगा, "हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन कि लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।" तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया। यह देख सब लोग मुँह के बल गिरकर बोल उठे, "यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है;"एलिय्याह ने उनसे कहा, "बाल के नबियों को पकड़ लो, उनमें से एक भी छूटने न पाए;" तब उन्होंने उनको पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें नीचे किशोन के नाले में ले जाकर

मार डाला।'' इस्राएलियों को पश्चाताप करने और परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए, एलिय्याह को स्वर्ग से आग बुलानी पड़ी और इस प्रकार सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति को एक बार फिर साबित करना पड़ा। इसके अंत में बाल के सभी नबियों को सताया गया। हाँ, कभी–कभी मनुष्य के रूप में, लोग अपने शारीरिक शरीर में थक जाते हैं। अपने परिवार के लिए मेहनत करना, उन्हें पूरी तरह से खत्म कर देता है। लेकिन, इन्हें उठाने वाला कोई नहीं है। याद रखें, जब परमेश्वर के लोग थके हुए और हारे हुए होते हैं, तो केवल परमेश्वर ही उनकी देखभाल करते है और उन्हें ऊपर उठाते है। आइए और भी पढ़ें 1 राजा 18:41–44 ''फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, "उठकर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है।" तब अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह कर्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिरकर अपना मुँह घुटनों के बीच किया, और उसने अपने सेवक से कहा, "चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि कर के देख," तब उसने चढ़कर देखा और लौटकर कहा, "कुछ नहीं दिखता।" एलिय्याह ने कहा, "फिर सात बार जा।" सातवीं बार उसने कहा, "देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ–सा एक छोटा बादल उठ रहा है।" एलिय्याह ने कहा, "अहाब के पास जाकर कह, 'रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए।' " एलिय्याह बारिश के लिए रोते हुए, सात बार प्रभु को प्रार्थना करता है। एक पहरेदार के रूप में नबी एलिय्याह भी थक गया होगा। वह यह साबित करते–करते थक गया था कि केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही सच्चा परमेश्वर है। बार–बार, अपने हृदय और प्राण से हम कल्पना कर सकते हैं कि एलिय्याह ने कैसे प्रभु को पुकारा होगा। इस प्रकार, वह भी अब थक गया था और सोचा कि बहुत हो गया, आइए हम पढ़े 1 राजा 19:4–5 ''परन्तु वह स्वयं जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाऊ के पेड़ के तले बैठ गया, वहाँ उसने यह कह कर अपनी मृत्यु माँगी, "हे यहोवा, बस है; अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूँ।" 5 वह झाऊ के पेड़ तले लेटकर सो गया और देखो एक दूत ने उसे छूकर कहा, "उठकर खा।"

आइए हम पढ़ें दानिय्येल 4:13 "मैं ने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा, कि एक पवित्र पहरुआ स्वर्ग से उतर आया।'' दानिय्येल भी एक पहरेदार था जो मनुष्य और परमेश्वर के बीच में खड़ा था। जो पहरेदार बनकर खड़े होते हैं, परमेश्वर उन्हें 'स्वर्गदूत' के रूप में एक और पहरेदार भेजते हैं। स्वर्गदूत की तरह, परमेश्वर ने एलिय्याह को उसके लिए मन्ना के साथ भेजा, जिसे उसने खाया और दृढ़ किया गया और इस तरह वह 40 दिन और रात तक दौड़ता रहा। यह मन्ना स्वर्ग का भोजन था, इसने लोगों को दृढ़ किया, वे दौड़ सकते थे और थके नहीं थे, उनके पसीने से बदबू नहीं आती थी। यह वह आशीष है जो परमेश्वर अपने पहरेदार को देते है। आइए हम पढ़ें मलाकी 3:18 ''तब तुम फिरकर धर्मी और दुष्ट का भेद, अर्थात् जो परमेश्वर की सेवा करता है, और जो उसकी सेवा नहीं करता, उन दोनों का भेद पहिचान सकोगे।'' मनुष्य अपने परिवार का पालन–पोषण करने के लिए कड़ी मेहनत करते हुए थक जाता हैं, वह भी डरता हैं और कभी–कभी जीवन में थक जाता हैं। लेकिन उनकी मदद करने वाला कोई नहीं है। याद रखें, परमेश्वर के बच्चों के लिए, यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जो उन्हें हमेशा ऊपर उठाएगा। परमेश्वर के चुने हुए पहरेदारों के लिए, वह अपने स्वर्गदूतों को उन्हें खिलाने का निर्देश देते है। हम में से प्रत्येक को सभा, कलीसिया और अपने लोगों के लिए एक पहरेदार की भूमिका निभानी

चाहिए। आइए हम पढ़ें यहेजकेल 38:7 ''"इसलिये तू तैयार हो जा; तू और जितनी भीड़ तेरे पास इकट्ठी हों, तैयार रहना, और तू उनका अगुवा बनना।'' प्रत्येक विश्वासी के लिए तैयार रहना महत्वपूर्ण है, फिर हमें उन लोगों को भी तैयार करना चाहिए जो हमारे साथ हमारे परिवार और साथी हैं और अंत में हमें प्रभु के लिए एक पहरेदार बनना चाहिए। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, बड़ी करुणा के साथ वह अदन की वाटिका में उनसे मिलने आया करते थे। मनुष्य से पहला प्रश्न था "आदम तू कहाँ है?"। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 3:9 ''तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, "तू कहाँ है?" परन्तु, परमेश्वर के प्रति मनुष्य का उत्तर क्या था, उत्पत्ति 4:9 ''तब यहोवा ने कैन से पूछा, "तेरा भाई हाबिल कहाँ है?" उसने कहा, "मालूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?" हमें प्रभु से कभी सवाल नहीं करना चाहिए? जब वह कुछ कहते है, तो हमें तैयार रहना चाहिए, हमें अपने परिवार और साथियों को भी तैयार करना चाहिए और इस तरह प्रभु के लिए एक पहरेदार बनना चाहिए ... हमें कभी भी प्रभु से सवाल नहीं करना चाहिए **"क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं?"।** हमें कभी भी प्रभु से प्रश्न नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें वह करना चाहिए जो वह आज्ञा देते है।

यहूदा 1:11 ''उन पर हाय! क्योंकि वे कैन की सी चाल चले, और मजदूरी के लिये बिलाम के समान भ्रष्ट हो गए हैं, और कोरह के समान विरोध करके नष्ट हुए हैं।'' जब हम उल्टा जवाब परमेश्वर को देते हैं और उनके विरुद्ध विद्रोह करते हैं, तो परमेश्वर हमारी तुलना कैन के समान करते है। परमेश्वर हमसे जो भी करने के लिए कहते है, उसमें हमें आनंद लेना चाहिए, हम नहीं जानते कि कब और कैसे प्रभु परमेश्वर हमें दूसरों से अलग कर हमें कैन की श्रेणी में डाल देंगे। हमने देखा है कि जब स्वर्गदूत एलिय्याह को खिलाने के लिए मन्ना लाया, तो एलिय्याह ने कभी भी स्वर्गदूत से सवाल नहीं किया, बल्कि मन्ना खाया और इस तरह 40 दिनों और रातों के लिए प्रभु परमेश्वर के लिए दौड़ने के लिए दृढ़ हुआ। वह यहोवा की इच्छा और योजना के अनुसार यहोवा के लिए दौड़ा। आज प्रभु हमसे भी यही उम्मीद करते हैं। यदि हम आज थके और हारे हुए हैं, तो वह अपना दूत भेजकर हमें हमारी थकान से छुड़ाएंगे। हमें अपने विचार, कार्य और कर्म में कभी भी कैन की तरह प्रभु परमेश्वर से सवाल नहीं करना चाहिए? याद रखें, हमें हर समय तत्पर रहना चाहिए और परमेश्वर के पहरेदार बनने के लिए तैयार रहना चाहिए। प्रभु ने हमारे भीतर जो सांस दी है वह अमूल्य और अनमोल है। बुद्धिमान राजा सुलैमान ने कहा है नीतिवचन 4:23 ''सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।'' शत्रु हमें लगातार परिक्षण देता है, लेकिन हमें उसका विरोध करना सीखना चाहिए। ईर्ष्या, क्रोध, अभिमान और अहंकार, हमें अपने जीवन में इन क्षेत्रों का ध्यान रखना चाहिए, इन क्षेत्रों में ही शत्रु हम पर हमला करेगा। शत्रु हमेशा भौतिक रूप से अधिक से अधिक चाहने का बीज बोता है, वह हमें कभी भी संतुष्ट नहीं देखना चाहेगा। यह वह क्षेत्र है जहां हमें वास्तव में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम शत्रु के शिकार न हों। इसलिए, हमें अपने हृदय को परिश्रमी रखना चाहिए और इससे जीवन के मुद्दे बहते हैं। हमें कभी भी शत्रु को अपने दिल और आत्मा को छूने नहीं देना चाहिए।

हम में से बहुत से लोग अपने शारीरिक शरीर की देखभाल करते हैं, लेकिन हम अपनी आत्मा को नज़रअंदाज़ करते हैं। जब यीशु ने धनवान की ओर देखा तो उन्होंने क्या कहा? आइए हम पढ़ें लूका 12:20 ''परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, 'हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है वह किसका होगा?' '' धनवान आदमी ने अपनी आत्मा को नज़रअंदाज़ किया, लेकिन अपने धन का ख्याल रखा। धन क्या है, यह हमें जीवन नहीं दे सकता, हमें ऐसी बीमारी लग सकती है जो कि धन ठीक नहीं कर सकता? याद रखें, कोई भी डॉक्टर या पैसा हमारे जीवन को नहीं बचा सकता है, लेकिन केवल परमेश्वर ही हमारे जीवन को बचा सकते हैं। इस प्रकार हमें अपनी आत्मा के लिए एक पहरेदार बनना चाहिए और किसी भी

चीज को नष्ट नहीं होने देना चाहिए। आइए हम एक बार फिर पढ़ें यहेजकेल 38:7 ''इसलिये तू तैयार हो जा; तू और जितनी भीड़ तेरे पास इकट्ठी हों, तैयार रहना, और तू उनका अगुवा बनना।'' इस्राएली जंगल में केवल मन्ना लेकर जीवित रहे, वे जंगल में जंगली सूअर की तरह बलवंत हुए। जब हम अपने प्रभु परमेश्वर के वचन को स्वीकार करते हैं, तो हम उनके द्वारा मजबूत होंगे। भजन संहिता 121:7 ''यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।'' प्रभु परमेश्वर हमारी आत्माओं की रक्षा करेंगे, हमारी आत्माओं की रक्षा के लिए उन्होंने कलवारी के क्रूस पर अपना जीवन दिया। प्रभु परमेश्वर हमेशा हमारी आत्माओं के प्रति सचेत रहते हैं। यशायाह 52:12 ''क्योंकि तुम को उतावली से निकलना नहीं, और न भागते हुए चलना पड़ेगा; क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे आगे अगुवाई करता हुआ चलेगा, और इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पीछे भी रक्षा करता चलेगा।'' आज भी हमारा परमेश्वर हमारे आगे चलते है और हमारी आत्मा को बचाते है। आइए हम पढ़ें रोमियों 1:21 ''इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया।'' हमारे दिलों में अंधेरा कब होगा? जब हम उनकी महिमा नहीं करते और उनके प्रति शुक्रगुजार नहीं होते। हमारे मूर्ख विचार हमें परमेश्वर के विरुद्ध खड़ा कर देते हैं। हम में से बहुत से लोग अपने विचारों में मूर्ख होते हैं और जो परमेश्वर ने हमें दिया है उससे हम कभी संतुष्ट नहीं होते हैं। जल्द ही हम प्रभु के शुक्रगुजार होना भूल जाते हैं। इस प्रकार, यह हमारी मूर्खता है जो हमें प्रभु से दूर ले जाती है। जब हम लालची हो जाते हैं तो प्रभु सताए जाते हैं और जब उन्होंने हमें भरपूर मात्रा में दिया है तो भी हम संतुष्ट नहीं होते हैं। इस प्रकार, प्रभु कहते हैं, **"सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।"।** हमें पहले स्वयं को परीक्षणों से दूर रखना चाहिए, फिर फिर हम अपने आप को, अपने परिवारों को तैयार करना चाहिए और अंत में परमेश्वर के लिए एक पहरेदार बनना चाहिए। वचन कहता है **"प्रभु के बच्चे कभी टुकड़े माँगते नहीं देखे जाते हैं"।** हमारा परमेश्वर एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, जिसने इस्राएलियों के लिए लाल समुद्र को अलग किया, उन्हें जंगल में मन्ना खिलाया। वह परमेश्वर है जिसने नबी एलिय्याह को दूत के माध्यम से खिलाया और इस तरह उसे 40 दिन और रात चलाने के लिए दृढ़ किया। हमारा परमेश्वर हमें उठाने और नीचे गिराने का सही समय जानते है। आइए हम प्रभु से प्रेम करते रहें और भय मानते रहें और प्रभु के पहरेदार बने रहें। जब हम प्रभु परमेश्वर के लिए गिरते हैं, तो वह हमें उठाएंगे और हमें एक बार फिर से दृढ़ करेंगे।

प्रभु परमेश्वर इस वचन को आशीष दें और हमारे जीवन में खुशियां लाएं।

पास्टर सरोजा म।